हुआ सो न्याय

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

सनातन सत्य क्या है? कुदरत का कानून क्या है? हुआ सो न्याय एक ऐसा विषय है जिस पर चिन्तन आवश्यक है। यदि किसी के साथ कोई अन्याय हो जाता है तो वह न्यायालय की शरण लेता है। न्यायालय में उसे न्याय मिलता है। हमारे कर्मों का लेखा–जोखा ईश्वर के पास सुरक्षित रहता है। वह सबसे बड़ा न्यायाधीश है। न्यायालयों में कभी किसी के साथ गलती हो सकती है किन्तु ईश्वर के न्यायालय में कभी गलती नहीं होती। इसीलिए कहा गया है कि हुआ सो न्याय। ईश्वर के न्यायलय में जो न्याय हो जाता है उसे नतमस्तक होकर सबकों स्वीकार करना पड़ता है। उससे बड़ी कोई अदालत नहीं है। वह न्याय का अंतिम न्यायालय है। वहां बिना प्रतिवेदन के ही न्याय प्राप्त होता है।

ईश्वर सबसे बड़ा न्यायाधीश है। कभी–कभी हमें लगता है कि ईश्वर ने मेरे साथ अन्याय किया, किन्तु वैसा नहीं है। वह कर्मों के अनुसार सबको पुरस्कार और दण्ड देता है। हमारे जन्म–जनमान्तर के कर्म सुरक्षित रहते हैं। कब कौनसा कर्म उदय में आ जाये इसको कोई नहीं जानता। कभी हम बहुत अच्छा कार्य करते हैं, किन्तु फिर भी दुःख भोगना पड़ता है। कुछ लोग अच्छा कार्य नहीं करते फिर भी सुख भोगते हैं। ऐसा क्यों? ऐसा इसलिए होता है कि पूर्व जन्म के किये गये सत् कर्म उदय में आने पर उसका परिणाम अच्छा मिलता है। इसलिए लगता है कि हमने कर्म अच्छा नहीं किया, किन्तु परिणाम अच्छा मिल गया। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हम इस समय जो बुरा कर्म कर रहे हैं कभी न कभी उसका बुरा परिणाम भोगना ही पड़ेगा। पुरातन कर्मों के अनुसार हमारा भाग्य बनता है। हम इस जन्म में जो भी कुछ बुरा या अच्छा कर रहे हैं वह कर्म भावी जीवन की दिशा तय कर रहा है। इसलिए सदैव सत्कर्म करना चाहिए।

भारत में अनेक धर्म और दर्शन हैं। सबका केन्द्र आत्मा है केवल भारत ही नहीं बल्कि बिश्व के सभी धर्मों और दर्शनों में आत्मा का विवेचन है। हम जो भी हाथ–पॉव हिला रहे हैं यह आत्मा के कारण है। आत्मा के ज्ञान के लिए सही दृष्टि सही सोच आवश्यक है। जगत, ईश्वर, आत्मा, जीव आदि दार्शनिक विषयों पर उनका अपना मौलिक चिन्तन है। इस चिंतन को लोगों ने स्वीकार किया और लाखों अनुयायी उनके दिखाये गये मार्ग का अनुकरण करते है। जगत के विषय में दादा भगवान का कहना है कि यह जो दिखायी दे रहा है उतना ही जगत नहीं है। शास्त्रों में तो कुछ ही अंश है। शेष जगत तो अवर्णनीय है। शब्दों के द्वारा भी जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता है। इसलिए दादा भगवान कहते हैं कि इसकी विशालता को मैं बतलाता हूं। जो कुदरत का न्याय है, उसमें एक क्षण के लिए भी अन्याय नहीं होता। न्यायालयों में न्याय भी हो सकता है और अन्याय भी हो सकता है। यह न्यायाधीश के विवेक पर निर्भर करता है कि वह किस प्रकार से न्याय को देखता है। यदि ईश्वर के न्याय को समझोगे तो आप इस जगत से मुक्त हो पाओगे, परन्तु यदि ईश्वर को जरा सा भी अन्यायी समझा तो वह आपके लिए जगत में उलझने का ही कारण है।

ईश्वर को न्यायी मानना नाम ज्ञान है। जैसा है वैसा जानना उसका नाम ज्ञान है और जैसा है वैसा न जानना उसका नाम अज्ञान है। किसी आदमी ने किसी दूसरे आदमी का मकान जला दिया तो कोई उस समय ये पूछे कि भगवान यह क्या है? यह न्याय है या अन्याय। यदि कहे कि न्याय है तो वह कुढ़ता रहे कि नालायक है और उसे अन्याय का फल मिलेगा। वह न्याय को ही अन्याय कहता है। जगत न्याय स्वरूप ही है। इसमें एक क्षण के लिए भी अन्याय नहीं होता। संसार में न्याय ढूंढ़ने से ही तो पूरी दुनिया में लड़ाई हुई है। आपने किसी को एक गाली दी तो उसके बदले में वह आपको दो–तीन गालियां दे देगा, क्योंकि उसका मन आप पर गुस्सा होता है। तब लोग क्या कहते हैं? तूं क्यों तीन गालियां दी, इसने तो एक ही गाली दी थी। अब इसमें क्या न्याय है। उसका हमें तीन ही देने का हिसाब होगा। तब न्याय बराबर होगा। यह नियम बड़ा साधारण है कि जैसा बुना होगा वह बुनायी वैसे ही वापस खुलेगी। अन्याय पूर्वक बुना हुआ होगा तो अन्याय से खुलेगा और न्यायपूर्वक बुना होगा तो न्याय से खुलेगा। अन्यायपूर्वक यदि बुना है और न्यायपूर्वक उधेड़ने चला है तो वह कैसे संभव है?

यह तय करना मानव जाति के लिए हमेसा से ही एक समस्या रहा है कि न्याय का ठीक–ठीक अर्थ क्या होना चाहिए और लगभग सदैव उसकी व्याख्या समय के संदर्भ में की गयी है। दो व्यक्तियों के बीच के कानूनी विवादों में दण्ड की व्यवस्था योग्यता के अनुसार ही होनी चाहिए। न्यायपालिका को समानता के मध्यवर्ती बिन्दु पर पहुंचने का प्रयत्न करना चाहिए। ईश्वर के न्याय को यदि इस तरह समझोगे कि हुआ सो न्याय तो आप इस संसार से मुक्त हो जाओगे। लोग जीवन में न्याय और मुक्ति को एक साथ ढूंढ़ते हैं। यह पूर्ण विरोधाभास की स्थिति है। यह दोनों एक साथ मिल ही नहीं सकते। प्रश्नों का अंत आने पर ही मुक्ति की शुरूआत होती है। अक्रम विज्ञान में सभी प्रश्नों का अंत आ जाता है, इसलिए यह बहुत ही सरल मार्ग है। दादा भगवान की यह अनमोल खोज है कि कुदरत कभी अन्यायी नहीं होता। जगत न्याय स्वरूप है। जो हुआ सो न्याय ही है।